रविवार, दिनाँक 09-07-2023 को सत्संग में हुए वचनों का संक्षिप्त विवरण

महाबीर जी दे चाह दे विच राहवां, संसार दे विच न फस जावां।।

संसार मुहब्बतां लांवदा ए, दासी दा दिल घबरांवदा ए।

इन्हां विच न मैं मुहब्बत लावां, संसार दे विच न फस जावां।।

ए संसार दे विच फसांवदे नी, आपे आपे ही प्रीतां पए लांवदे नी।

इन्हां कोलों बली निर्लेप राहवां, संसार दे विच न फस जावां।।

संसार समुन्द्र डरांवदा ए, भैणां नूं तरना न आंवदा ए।

रघुनाथ जी दे मन्दिरां विच मैं जावां, संसार दे विच न फस जावां।।

सानू नाम दा जादू पा दे बली, रघुनाथ जी दे घर पहुंचा दे बली।

चित्त रघुनाथ जी दे चरणां दे विच लावां, संसार दे विच न फस जावां।।

महाबीर जी रस्ता बताया ए, रघुनाथ जी दे चरणीं बिठाया ए।

दिन रात मैं सेवा दे विच राहवां, संसार दे विच न फस जावां।।

ए मन किसे पासे न जावे, हरदम सांवले चरणां दे विच राहवे।

रघुनाथ महाबीर जी दा दीदार पावां, संसार दे विच न फस जावां।।

हथ जोड़ के दासी पुकारदी ए, दर्शन देंदे रहणा बलधार जी ए।

कई सूरजां दा सूरज मै देखदी राहवां, संसार दे विच न फस जावां।।

इस भजन में सच्चेपातशाह जी सबको सन्देश दे रहे हैं कि अपनी सुरत को जगत से स्वतन्त्र रखते हुए, जिस कार्य सिद्धि हेतु आपको यह जन्म/जीवन मिला है उसे परमेश्वर की आज्ञाओं का सहर्ष व समर्पित भाव से पालन करते हुए सेवा में लगाओ। जानो यदि इस

लक्ष्य के प्रति हमारा ख़्याल सावधान नहीं रहता तो संसार हमारे मार्ग में अवरोध उत्पन्न कर देता है। यही सबके साथ हुआ पड़ा है यानि असावधानी के कारण आजकल अधिक सजनों का ख़्याल संसार में उलझा पड़ा है। अब इस संसार में सब आ जाते हैं - हम भी, आप भी, अन्य परिवारजन व समाज भी। जब हम सब इस संसार के अन्तर्गत आ जाते हैं तो संसार दिन रात सबको आवाज़ें मारता है ताकि वह सजनों के ख़्याल को अपने साथ जोड़ सके। इसी कारण आम इन्सान जो अपने प्रति सतर्क नहीं होता, वह अपने मन को परमात्मा में लीन रखने में असमर्थ रहता है। परिणामतः वह खुद को समझने में असफल हो आत्म-विस्मृत हो जाता है। ऐसा न हो इस हेतु सजनों मन में ऐसी उमंग व उत्साह पैदा करो जिसके वशीभूत होकर आपका ख़्याल किसी विध् भी संसार में न उलझे। यहाँ प्रश्न यह उठता है कि हमें कैसे पता चलेगा कि हमारा ख़्याल जगत में उलझ गया है? तो जानो जब हमारे मन में काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार हावी हो जाते हैं तो समझ लेना कि हमारा ख़्याल संसार में बुरी तरह उलझ चुका है और उससे किसी विध् भी बच नहीं सकता। आशय यह है कि ऐसे इन्सान को फिर संसारी रोग लग जाता है जो कि अति भारी व कष्टदायक होता है। यही संसारी रोग हमारी मानसिक स्थिति को इतना कमज़ोर बना देता है कि वह बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो जाती है। अन्य शब्दों में कहें तो यह संसारी रोग हमारी विवेक शक्ति को हर लेता है और हम सच-झूठ की परख करने में असमर्थ हो जाते हैं। हमारी इसी असमर्थता का लाभ हमारे संगी-साथी उठाते हैं और हमें संसार में उलझाते-उलझाते मोह बन्धन में बान्धकर रख देते हैं। इसी कारण हम अपनी इस वास्तविकता को भूल जाते हैं कि हम सुरत रूप में और कुछ नहीं अपितु परमात्मा का प्रतिबिम्ब ही हैं। इस तरह हमें ज्ञात ही नहीं रहता कि आत्मा में जो परमात्मा है वही हमारा यथार्थ अपना आप है यानि हम हक़ीकत में परमात्मा के अतिरिक्त और कुछ नहीं हैं। इस सन्दर्भ में हमें याद रखना है कि जब तक आत्मा में परमात्मा शोभित है, तब तक मैं हूँ यानि मेरा यह शरीर क्रियाशील है। इसके विपरीत यदि आत्मा में परमात्मा शोभित नहीं है तो फिर प्रतिबिम्ब भी नहीं रहता। प्रतिबिम्ब नहीं तो रोम-रोम प्रकाशित कैसे रह सकता है और प्राण हरकत में कैसे रह सकते हैं? इस तरह शरीर जड़ हो जाता है जो कि अपना विनाश स्वयं करने की बात होती है।

सजनों आज के समय में यह भूल सबसे हो चुकी है जो कि अपने आप में बहुत बड़ा पाप है। अब यदि इस पापकर्म से छुटकारा पाना चाहते हो तो अपनी सुरत को आत्मा में जो

परमात्मा शोभित है, उसके प्रति समर्पित रखो और इस जगत की यथा सामर्थ्य निष्काम भाव से सेवा करो। जानो यही हमारा कर्त्तव्य है। इस कर्त्तव्य को कुदरत के नीति-नियम अनुसार निभाने पर ही हम सफल हो परोपकारी नाम कहा सकते हैं। इस प्रकार जब अन्त रूप में जगत का भला होता है तो हमारा भी भला हो जाता है क्योंकि ऐसा होने पर हम अपने जीवन का लक्ष्य जो कि मोक्ष है, उसे पा निर्विकारी जीवन यापन करने की सामर्थ्य दर्शाते हैं। इस तरह हम बिना खोये सब कुछ पा जाते है और शान्त हो जाते हैं। शान्त होने का अर्थ होता है - मन का प्रभु में लीन हो जाना। जब मन प्रभु में लीन हो जाता है तो वहाँ से आ रही परम आज्ञाओं को सुन व समझ पाता है और तद्नुसार अपने जीवन को सत्यपथ पर आगे बढ़ाने के लिए तत्पर हो जाता है।

इस सन्दर्भ में जानो कि हमारे हृदय में हर पल, हर क्षण ज्ञानमय अनहद नाद के रूप में उस सत्यज्ञान का प्रवाह बह रहा है। आवश्यकता केवल उसे ध्यान देकर सुनने की है। जानो उसे तभी सुन पाओगे जब ख़्याल को संसार से हटाकर परमार्थ में लगाओगे। इसके विपरीत अगर हमारे अन्दर संसार का शोर यानि उसी की सोच और बातें घूमती रहेंगी तो इस शोर में उस परम नाद को नहीं सुन पाओगे। इसी बहरेपन के कारण ही आपका जीवन सार्थक बनने की बजाय निरर्थक व्यतीत हो रहा है और अपनी मूर्खता के कारण ही आप अपना यह अनमोल मानव जीवन व्यर्थ गँवा रहे हो। यहाँ सजनों जानो कि कालचक्र के अनुसार अब कलुकाल के बाद दग्ध-भस्म और फिर सतयुग आने वाला है। अगर वक्त रहते अभी भी अपना जीवन न सँवारा तो दुर्गति हो जाएगी और आप अपने वैरी बनकर किसी की संगति के काबिल नहीं रहोगे। इसी सन्दर्भ में अब आगे सुनोः-

(श्री साजन जी के मुख के शब्द)

शब्दः-

एक दा करो अजपा जाप, फिर ब्रह्म शब्द दा पाओ प्रकाश।

एहो सजनों पकड़ो इतिहास, फिर ब्रह्म स्वरूप है अपना आप।।

जन्म दी बाजी जित चाहे हार, फिर जीत हार है तेरे हाथ।

अपने जन्म नूं न कर घात, अपने जन्म नूं न कर घात।।

कुदरत ने तैनुं इन्सान बनाया, इस जगत ते तां तूं आया उस ईश्वर दी है करामत।

अपने जन्म नूं न कर घात, अपने जन्म नूं न कर घात।।

माता सजन जी दे गर्भ विच आया, उस ईश्वर ने तेरा अंग अंग सजाया।

सूरज चांद दा डिट्ठा प्रकाश, अपने जन्म नूं न कर घात, अपने जन्म नूं न कर घात।।

उस ईश्वर दे तूं गुण गा लै, उस ईश्वर दा ध्यान लगा लै।

उस ईश्वर दा सिमरन करके, एहो धन दौलत चलेगा साथ।

अपने जन्म नूं न कर घात, अपने जन्म नूं न कर घात।।

खबरदार अकल ते राहवीं, बुरा संग कर अकल अपनी न गवावीं।

अकल न कर बरबाद, अकल कर लै तू आज़ाद।

अपने जन्म नूं न कर घात, अपने जन्म नूं न कर घात।।

अकल है सारा जगजीत मीतां दी ओ है ओ मीत अकल अपनी टिकाणे ला।

फिर तूं उस ईश्वर नूं पा, फिर जीत जीत है तेरे हाथ।

अपने जन्म नूं न कर घात, अपने जन्म नूं न कर घात।।

अकलवान ते ईश्वर रैहंदे प्रसन्न, अकल इन्सान नूं करदी है दंग।

अकल वेदों में है विदित, अकल वेदों में है अस्थित।

अकल है तुम्हारे पास, अपने जन्म नूं न कर घात, अपने जन्म नूं न कर घात।।

शब्दः-

सजनों जे दुनियां वल्लों मुख मोड़ लिया, फिर दुनियां वल मुख करना क्यों।

ऐह दुनियां है जे मुसाफिरख़ाना इस दुनियां वल फिर मुख फेरना क्यों।।

(श्री साजन जी दे मुख दी शाख)

(सुनो मेरे सजनों ईश्वर तुहानुं की कैहंदे हिन)

मेरा नाम है बक्षन्द ओ सजनों हो तुसां अक्लमन्द मेरा नाम है बक्षन्द।

अपनी अक्ल दे नाल कुल दुनियां नूं जगाओ, कुल दुनियां नूं जगाओ।

मेरा नाम है बक्षन्द ओ सजनों हो तुसां अक्लमन्द मेरा नाम है बक्षन्द।।

अपनी अक्ल दे नाल, दुनियां ते बुझिया दीपक जगाओ दुनियां ते बुझिया दीपक जगाओ।

मेरा नाम है बक्षन्द ओ सजनों हो तुसां अक्लमन्द मेरा नाम है बक्षन्द।।

अपनी अक्ल दा है प्रकाश, परउपकार कुल दुनियां ते दिखाओ परउपकार कुल दुनियां ते दिखाओ।

मेरा नाम है बक्षन्द ओ सजनों हो तुसां अक्लमन्द मेरा नाम है बक्षन्द।।

सजनों क्या कभी विचारा है कि आप सबको सद्मार्ग पर लाने के लिए कितनी मेहनत होती है? इसके बावजूद भी यदि आप दिलचस्पी में आकर सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में विदित सीधी व स्पष्ट जीवनदायक बात को अनसुना करते हो और अपने जीवन व्यवहार में नहीं उतारते तो अच्छा नहीं लगता। यह अपने आप में कुदरत की दात का सम्मान नहीं अपितु निरादर होता है और इस निरादर का दुष्परिणाम निकलता है। आशय यह है कि यह अपने साथ आप वैर कमाने की बात होती है। ऐसा न हो इस हेतु परमेश्वर हर इन्सान को पुनः आत्म-स्मृति में लाने के लिए सचेत करते हुए कहते हैं कि तुझे यह मानव का रूप कुदरत ने दिया है। अतः इसके मोल को जान और अपने जीवन को सफल बना मोक्ष को प्राप्त कर ले। फिर वह कहते हैं कि हे इन्सान ! अपनी अक्ल टिकाणे ला ताकि अपने आप को जीवन के सत्यपथ पर धर्म-संगत प्रशस्त कर निर्विकारिता से जीवन जीने के योग्य बन सके। इसीलिए सजनों ईश्वर कहते हैं:-

खबरदार अकल ते राहवीं, बुरा संग कर अकल अपनी न गवावीं

यहाँ सजनों बुरा संग संकल्प का भी हो सकता है, सम्बन्धियों का भी हो सकता है व समाज का भी हो सकता है। इसके अतिरिक्त बुरा संग जो सारा दिन टी वी चलाकर व सबको बहस करते व लड़ते हुए देखते हो, उसका भी होता है। फिर इसका बहुत बुरा प्रभाव मन पर पड़ता है। यहाँ विडम्बना की बात तो यह है कि जो दिखता है, उसमें यथार्थ कुछ भी नहीं होता। इसीलिए ऐसा देखने से आपकी मति मारी जाती है और आप जो देखते हो उसकी चर्चा अन्यों से भी कर, उस अज्ञानमयी स्थिति में उलझते जाते हो। याद रखो आज के युग में आपके ख़्याल को अज्ञानमयी स्थिति में उलझाने वाले असंख्य तरीके हैं। आप उन तरीकों में फँसकर उनकी चँगुल में ग़िरफ्त हो जाते हो जो कि बहुत चतुर होते हैं और इस विश्व पर साम्राज्य करना चाहते हैं। ऐसे इन्सानों के चँगुल में फँसकर आप अपना जीवन बर्बाद कर बैठते हो। इतना होने पर भी यह दयालु परमेश्वर आप जीवों पर दया करते हुए कहते हैं कि हे मानव ! जान अक्ल यानि ज्ञान कहाँ स्थित है और वह कहाँ से पूर्णतया प्राप्त हो सकता है? इस सन्दर्भ में वह स्पष्ट करते हुए कहते हैं कि अक्ल वेदों मे अस्थित है। अतः उस वाणी के साथ अपने ख़्याल को जोड़ और उसके ज्ञानमय प्रवाह से अपने जीवन को आबाद कर अक्लमन्द नाम कहा। कहने का आशय यह है कि जो शब्द ब्रह्म विचार कुदरत से प्राप्त हो रहे हैं, उस कुदरती वाणी से अपने ख़्याल का नाता जोड़। इस तरह उस वाणी को सुनने में पूरी तरह से सक्षम होकर तद्नुकूल आचार-व्यवहार का तरीका दर्शा। इस तरह अपनी सोच-विचार व बातचीत को सद्-विचारों के अनुसार साधकर अपने जीवन को सद्मार्ग पर आगे बढ़ा। इससे स्पष्ट होता है कि जिस कुदरत ने हमें इन्सान बनाया है वह हमें इन्सानियत में साधने के प्रति जागृति में लाने हेतु अत्यन्त ही सहज और सरल ढँग से उन्नति-पथ पर प्रशस्त होने का मार्ग बता रही है ताकि हम आत्म-सुधार कर सकें।

यहाँ सजनों जान लो कि यदि इतना सुनने के पश्चात भी हम नहीं सुधरते तो हम अपने वैरी आप हैं। इस सन्दर्भ में हम तो यही कहेंगे कि अब सब अपने सजन बन जाओ और इस हेतु इस महान जीवनदायक सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ की वाणी के एक-एक शब्द को ध्यान से विचार में ला आत्मसात कर लो यानि अपने जीवन में उतार लो। इसके अतिरिक्त

जो अन्य जहाँ कहीं से भी ग्रहण किया है, वह सब भूल जाओ। याद रखो कि शास्त्र कह रहा हैः-

उस ईश्वर दे तूं गुण गा लै, उस ईश्वर दा ध्यान लगा लै

यहाँ विचार करो कि आप दिन में कितना समय ईश्वर के विषय में चर्चा करते हो और कितना समय संसारी बातों में गँवाते हो? निःसन्देह इस विवेचन उपरान्त आपको खुद की नादानी पर शर्म आएगी। सजनों जब तक इस प्रकार सही तरीके से जाँचना कर शर्मसार नहीं होंगे तब तक काम कैसे बनेगा? सो खुद पर उपकार करो और सम्भल जाओ। इसी प्रकार आपको और आपके परिवारों को सम्भालने हेतु ही ध्यान-कक्ष से सारा प्रयास चल रहा है। इस प्रयास में दिनाँक २३ जुलाई को जो सावन की मीटिंग है, उस दिन भी द्वारे की नीति अनुसार यत्न होना है। अब वो यत्न कैसे होगा ध्यान से सुनोः-

सजन जी,

जय सीता राम जी।

सब सजनों की सूचनार्थ इस वर्ष सावन की मीटिंग, रविवार, दिनाँक 23 जुलाई 2023 को होनी सुनिश्चित हुई है। सभी स्कूल वाले सजनों ने अपनी सभाओं में एकत्रित होकर यह मीटिंग करनी है व इस हेतु सत्संग की आरंभिक विधि करने के पश्चात्ः-

1 सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ से उद्धृत कीर्तन 'किस तरह बताऊँ दुनियां दी हालत' व 'वक्त दे मुताबिक सजन- ओ सब कोई प्यार करता है', मिलकर गाने/पढ़ने व समझने हैं।

2 चैत्र की मीटिंग से लेकर सावन की मीटिंग तक का सबक यादगीरी में रखते हुए, ग्रन्थ में से कलुकाल वाले कीर्तन तरतीब से पढ़ने आरम्भ करने हैं व कार्तिक की मीटिंग तक सारे कीर्तन पढ़कर अर्थ सहित समझ लेने हैं। आपकी जानकारी हेतु सजनों यह कीर्तन 'हे स्वामिन कलयुग नूं आप हटा, नारद जी रहे ने बता' से आरम्भ होते हैं और इन्हें आपने मीटिंग से अगले इतवार से तरतीबवार बोलना आरम्भ करना है यानि आगे पीछे नहीं बोलना। जानो सजनों इस क्रिया का मुख्य उद्देश्य स्वभावों में से कलुकाल हटा 'हौं-मैं'' को

मिटाकर कार्तिक की मीटिंग से पहले घर सतयुग बना लेना है। इसके साथ ही विराट दृष्टि पर खड़े होकर, ब्रह्म-वृत्ति को ठहरा लेना है। कैसेः- जिह्वा स्वतन्त्र, संकल्प स्वच्छ और निगाह कंचन करके।

3 बुज़ुर्गों, बच्चों और गृहस्थ के फर्ज़-अदा के बारे में बताए पर्चे पढ़ने हैं और इसके प्रति अपनी जाँचना करनी है। आपकी सूचनार्थ यह पर्चे 'श्री साजन जी के पत्र - सभाओं के नाम' नामक पुस्तक में पृष्ठ संख्या 148 से लेकर पृष्ठ संख्या 153 पर वर्णित हैं। इस तरह सजनों इन पर्चों के अनुरूप आपने अपने आप को गृहस्थ-आश्रम ठीक ढंग से चलाने के लिए कहना व समझाना है तथा हर एक के प्रति अपना फर्ज़-अदा हँसकर करना आरम्भ कर देना है। याद रहे यही इन तीन महीनों की पढ़ाई का उद्देश्य है जिसे जीवन लक्ष्य की प्राप्ति हेतु आपने समयबद्ध पूरा कर तरक्की करनी है व अगली मीटिंग से पूर्व अपना घर सतयुग बना लेना है।

नोटः-

1 इस बात की सूचना अपनी-अपनी सभाओं को जो आपके साथ हैं, उनको समय पर दे देनी है। साथ ही श्री साजन जी के वचनानुसार इस मीटिंग पर मालिक के प्यारों को भी शर्बत की बोतल/कपड़े/पैसे आदि सुविधानुसार बाँट देने हैं।

2 इसी के साथ सजनों जैसा कि आप सजनों को पता ही है कि आत्मपद की प्राप्ति हेतु विगत माहों में हम सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में विदित प्रथम त्रैमासिक योजना के पाठ्यक्रम अनुरूप ध्यान कक्ष में लग रही कक्षाओं के माध्यम से सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ, आत्मिक ज्ञान व जिह्वा स्वतन्त्र की जीवनदायक आवश्यकता पर भली-भांति विचार कर चुके हैं। अब समय है सजनों आगे बढ़ने से पूर्व जो हमने विचारा है, उसे अच्छी तरह आत्मसात् कर आगे बताने के योग्य बनने का। इसी बात के दृष्टिगत सजनों दिनाँक 23 जुलाई सावन की मीटिंग के दिन आप सबका इम्तिहान रखा गया है। इस इम्तिहान का पाठयक्रम सजनों वही है जो हमने गत दो माहों में ध्यान-कक्ष की कक्षाओं में पढ़ा है। अब आपको करना यह

है कि दिनाँक 23 जुलाई से पूर्व इस निर्धारित पाठ्यक्रम के अनुरूप अपने आपको, अपने बच्चों को व पारिवारिक सदस्यों को मन-वचन-कर्म से इस प्रकार साध लेना है कि न तो इन वचनों के विपरीत आपका आहार व आचार हो और न ही विचार व व्यवहार हो। इसी के साथ आप व आपके पारिवारिक सदस्यों ने इस विषय को यथातथ्य आगे बताने की सक्षमता भी धारण कर लेनी है। फिर दिनाँक 23 जुलाई को ओपन हाउस सैशन के दौरान सजनों आपने उपरोक्त के विषय में क्या जाना-समझा व आपको ऐसा करके कैसी प्रतीति हुई उसका प्रत्यक्ष सबको कराना है। आपके काम को आसान करने के लिए हम समुचित विषयों को विभिन्न इच्छुक शहरों के मध्य बाँट देंगे। आप में से प्रत्येक शहर के सजनों को उस प्रदत्त विषय पर अपने बच्चों को, अपने बड़ों को व ख़ुद को बोलने के लिए तैयार करना होगा। इसके लिए कोई निर्धारित आयु सीमा नहीं है। ४ साल से लेकर जितनी भी उम्र का सजन चाहे वह सम्बन्धित विषय में अपने विचार या तो स्वयं अकेला या फिर पारिवारिक सदस्यों सहित मिलकर प्रकट कर सकता है। याद रहे आपका प्रदर्शन पाठ्यक्रम के अनुरूप हो। कक्षाओं में क्या बताया समझाया गया वह आप सतयुग दर्शन ट्रस्ट व ध्यान कक्ष के यू-ट्यूब चैनल पर जाकर देख सकते हैं। दिल्ली स्कूल की सभी सभाएँ जिन्होने मीटिंग के लिए वसुन्धरा आना है उन के लिए तो इस क्रिया में भाग लेना अनिवार्य है। इसके अतिरिक्त बाहर के शहर के भी जो सजन इस संदर्भ में मेहनत कर रहे हैं वे भी इस क्रिया में भाग ले सकते हैं। छोटे बच्चों को अधिक से अधिक तीन मिनट का व बड़े सजनो को अधिक से अधिक एक विषय पर चार मिनट के लिए बोलने का समय दिया जाएगा। हम चाहते हैं कि अधिक से अधिक नए आ रहे युवा बच्चे, भाई-बहन, पति-पत्नी व बड़े सजन इसमें भाग लें। इसलिए सबने अपनी सभाओं के सजनों को प्रेरित करना है। आपकी व आपकी सभा की उन्नति का जायजा इसी क्रिया से पता लग जाएगा। जो इस दिन ध्यान कक्ष में जो अनुपस्थित होगा उससे पता लग जाएगा कि ये सजन आत्मिक ज्ञान प्राप्ति का इच्छुक नहीं है इसलिए सब विचार कर अवकाश लेना।

हर शहर के सजनों का आत्मोत्थान की इस क्रिया में स्वागत है। अतः जो भी शहर के सजन इच्छुक हैं वे आज ही अपना नाम अंकिता व ईशा सजन जी को दे दें। मंगलवार के बाद आने वाले सजनों के नाम नहीं Consider किए जाएंगे। जिन भी फरीदाबाद, गुरूग्राम, दिल्ली, वसुन्धरा आदि के सजनों ने ध्यान-कक्ष में ये कक्षाएँ ली हैं वे अपने-अपने शहर के सजनों की जिम्मेवारी संभालेंगे। जैसे कि दिल्ली से प्रेरणा सजन व खुशबुं सजन,

वसुन्धरा से शिवोमना एवं प्रीति विरमानी, फरीदाबाद से नेहा एवं सरवेश सजन, गुडगाँव के लिए दीपा एवं प्रियंका सजन होंगे व रेवाड़ी की जिम्मेदारी आकांक्षा सजन जी संभालेंगे। अंकिता व ईशा सजन जी अपने निर्देशन में इस आयोजन की पूरी तैयारी कर-कर अच्छी से अच्छी प्रस्तुति देने की जिम्मेदारी संभालेंगी। दीपेन्द्र व नितिन सजन जी ने सारी व्यवस्था भली-भांति करनी है ताकि उत्कृष्ट प्रस्तुतियों को ध्यान-कक्ष के चैनलस पर प्रसारित किया जा सके। विस्तृत जानकारी आपके पास शीघ्र ही आ जाएगी।

सो सजनों अपनी अक्ल नाल कुल दुनियाँ ते बुझिया दीपक जलाने हेतु हर सजन ने पूरा मन-चित्त लगाकर भरसक प्रयास करना है और किसी कारणवश भी हारना नहीं है। जानो सजनों अगर ऐसा पुरुषार्थ करने में समर्थ हो गये तो आपके जीवन में ऐसा बदलाव आ जाएगा कि आप हारी हुई बाज़ी जीतने के योग्य बन जाओगे। इस महत्ता के दृष्टिगत सब यत्न करना। सजनों यदि अभी तक नहीं किया तो कम से कम अब तो कर लो। इस बात को सब अपने अन्दर विचारो और पुरुषार्थ दिखाकर सफलता को प्राप्त हो जाओ। अपकी सफलता का जायजा हम सात सितम्बर 2023 को लेंगे। तब पता चलेगा कि आप कितना अपने साथ, अपने परिवारों व सामाजिक सदस्यों को अपने साथ लेने में सफल हुए हो। इस तरह उस दिन आपका नतीजा निकलेगा। अगर पास हो गये तो समझ लेना कि आपका काम बनने वाला है। इससे आपकी हिम्मत बढ़ेगी और आपके अन्दर स्वार्थ से परमार्थ बनने का आत्म-विश्वास जाग्रत होगा। इस आत्म-विश्वास के जागने पर फिर आप हार नहीं खाओगे। इस तरह आपका जीवन प्रसन्नचित्तता की ओर आगे बढ़ जाएगा और आप अफुर होकर आत्म-साक्षात्कार कर लोगे यानि खुद के यथार्थ को जान जाओगे। ऐसा होने पर सहज ही कह उठोगे - हम परमात्मा के सिवाय और कुछ नहीं क्योंकि परमात्मा अन्दर भी है और बाहर भी है। अब उसे कहीं भी खोजने की आवश्यकता नहीं। इस तरह सजनों परमात्मा की पहचान कर सद्मार्ग पर प्रशस्त हो जाओगे। सो अब ऐसा ही उद्यम दिखाना और जन्म की बाज़ी जीत जाना।

इन्हीं शुभकामनाओं सहित।